क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, पुणे

प्रतिभा

प्रथम राजभाषा वार्षिक पत्रिका २०२१

पारपत्र परिवार
पुणे क्षेत्रीय कार्यालय

प्रतिभा

प्रथम राजभाषा वार्षिक पत्रिका, पुणे

मुख्य संरक्षक

श्री. अनंत शंकर ताकवाले, भा.पु.से., क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी

संरक्षक

श्री. वेणुगोपाल ई. एम., वरिष्ठ अधीक्षक

हिन्दी अधिकारी

श्री. संदीप कुमार कुशवाहा, अधीक्षक

संपादक

श्री. एस. जगन मोहन, सहायक पारपत्र अधिकारी

सह संपादक

श्री. विनय वसिष्ठ, सहायक अधीक्षक

विशेष सहयोग

1. श्री. विनोद कुटे, सहायक अधीक्षक
2. श्री. संतोष सदरे, वरिष्ठ पारपत्र सहायक
3. सुश्री. निकिता कुलकर्णी, डी.ई.ओ.

ई-पत्रिका रचना

प्राकृत प्रकाशन, पुणे

मुखपृष्ठ: पिंपळगाव जोगा बांध, जुन्नर (पुणे)

मलपृष्ठ: शिवनेरी किला (छ. शिवाजी महाराज जन्मभूमि, जुन्नर, पुणे)

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

सत्यमेव जयते

विदेश राज्य मंत्री एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Parliamentary Affair
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यधिक ख़ुशी हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे द्वारा राजभाषा पत्रिका '**प्रतिभा**' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है जिससे क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे में राजभाषा के प्रचार प्रसार में व्यापक सफलता मिलेगी जिसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

यह भी उल्लेखनीय है कि सरकारी सेवा में कई अधिकारी एवं कर्मचारी भी हैं जो अपनी नौकरी के साथ-साथ रचनात्मक लेखन में भी रुचि रखते हैं और हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं, उनके लिए भी यह एक बेहतर अवसर प्रदान करेगा।

मैं राजभाषा पत्रिका प्रकाशन से जुड़े क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे के सभी कार्मिकों का पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

(वी. मुरलीधरन)
विदेश राज्य मंत्री

Office : South Block, New Delhi-110 011. Tel : 011-23011141, 23014070, 23794337 Fax : 011-23011425

Sanjay Bhattacharyya
Secretary (CPV & OIA)
Tel : 49018134
Fax : 49018135
E-mail : secycpv@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI
2013, 'C' Wing, Jawaharlal Nehru Bhawan
New Delhi-110011

संदेश

यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, पुणे अपनी राजभाषा पत्रिका 'प्रतिभा' के पहले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिन्दी आम जन मानस की भाषा है और भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण देश मे इसका प्रभावी प्रयोग भारतीयता को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाता है।

पासपोर्ट कार्यालय केंद्र सरकार के ऐसे कार्यालय हैं जहाँ बड़े पैमाने पर जन–संपर्क का कार्य होता है। इन कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाए जाने से सभी पक्षों को सुविधा होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने नाम के अनुरूप यह पत्रिका के सभी रचनाकारो की प्रतिभा को उजागर और सुदृढ़ करेगी। इसके सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

संजय भट्टाचार्य

(संजय भट्टाचार्य)
सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

दिनांक: 25 मार्च 2021
नई दिल्ली

जयंत खोब्रागड़े
संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
और मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि पासपोर्ट कार्यालय, पुणे अपनी राजभाषा पत्रिका **'प्रतिभा'** के पहले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से एक तरफ कार्मिकों की सृजनात्मकता में वृद्धि होती है तथा दूसरी और हिन्दी में काम-काज करने के लिए माहौल भी विकसित होता है।

पासपोर्ट कार्यालय व्यापक जन-संपर्क के कार्यालय है ऐसे में इन कार्यालयों द्वारा राजभाषा में कार्य निष्पादन किए जाने से कार्यालय का आम जनमानस से प्रभावी संबंध स्थापित होता है।

भारत विविध संस्कृतियों और भाषाओं का देश है। इन विविधताओं के मध्य सबको एक सूत्र में जोड़े रखने का कार्य राजभाषा हिन्दी कर रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय के समस्त कर्मियों की प्रतिभा को सबल मंच प्रदान करेगी। मेरी ओर से पत्रिका के प्रकाशन के लिए सभी कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

जयंत खोब्रागडे

(जयंत खोब्रागड़े)

नई दिल्ली
दिनांक : 25 मार्च 2021

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

हरकेश मीना
उप सचिव (हिंदी)
दूरभाष: 011-23013889
ई-मेल:dshindi@mea.gov.in

दिनांक: 16 मार्च, 2021

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे अपनी गृह पत्रिका **'प्रतिभा'** के **पहले अंक** का प्रकाशन करने जा रहा है।

हाल ही में, मैंने क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया था, जहां राजभाषा की दृष्टि से संतोषजनक कार्य हो रहा है। राजभाषा हिंदी में पत्रिका प्रकाशित करने से इस कार्यालय में हिंदी में हो रहे सरकारी काम-काज को और अधिक गति प्राप्त होगी बल्कि इस कार्यालय के कार्मिकों को अपनी रचनात्मक लेखन अभिव्यक्ति के लिए अवसर मिलेगा। जिसका कार्यालय प्रमुख स्वयं लेखन और पठन-पाठन में रूचि रखता हो वहां इस प्रकार के प्रकाशन स्वयं में एक प्रेरणा स्रोत बनते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की मौलिक रचनाओं को समुचित स्थान मिलेगा और साहित्य की विभिन्न विधाओं के बहुरंगी कलेवर पाठक-वर्ग को पढ़ने को मिलेंगे।

मैं पुणे स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय परिवार के समस्त कार्मिकों को इसके लिए बधाई देता हूं और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूं।

शुभकामनाओं सहित !

(हरकेश मीना)

अनंत शंकर ताकवाले (भा.पो.से.)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, पुणे
ANANT SHANKAR TAKWALE (I.P.S.)
Regional Passport Officer, Pune

सत्यमेव जयते

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, पुणे
विदेश मंत्रालय
REGIONAL PASSPORT OFFICE, PUNE
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

संदेश

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय पुणे की प्रथम राजभाषा वार्षिक पत्रिका 'प्रतिभा' के अंक को प्रस्तुत करते हुये मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। मुख्य संरक्षक की भूमिका निभाते हुये मुझे मेरे सहयोगी श्री एस. जगन मोहन, सहायक पारपत्र अधिकारी; श्री वेणुगोपाल ई. एम., वरिष्ठ अधीक्षक; श्री संदीप कुमार कुशवाहा, अधीक्षक; श्री विनय वशिष्ठ, सहायक अधीक्षक एवं इनके अतिरिक्त जिन अधिकारियों/ कर्मचारियों ने रचनात्मक लेखन दिया है तथा इस कार्यालय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत जिन विद्यार्थियों ने चित्रकला, पत्र लेखन, निबंध लेखन के माध्यम से अपना योगदान दिया है, मैं उन सभी का अत्यंत आभारी हूँ।

इस अंक के माध्यम से हमने स्वच्छता, पर्यावरण के प्रति प्रेम एवं हमारा कर्तव्य, सांप्रदायिक सौहार्द्र, विश्वशान्ति, कृषि संस्कृति और आत्मा निर्भर भारत इत्यादि अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर विचारों को प्रकट करने का प्रयास किया है। सभी सहयोगियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

(अनंत शंकर ताकवाले)
क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी

पुणे
दिनांक: 26 मार्च 2021

अनुक्रमणिका

अ. क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	बेटी बचाओ	1
2.	विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व	2
3.	कविताएं	3
4.	स्वच्छता पखवाड़ा	4
5.	स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा	5 - 10
6.	नदी की आत्मकथा	11
7.	पर्यावरण कर्तव्य और कानून	12
8.	नदिया मानव जीवन में योगदान देती है	13
9.	विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व	14
10.	विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व	15
11.	सांप्रदायिक सौहार्द तथा विश्व शांति को प्राप्ति	16
12.	हिंदी पखवाड़ा	17-18
13.	चित्र कहानी प्रथम क्रमांक	19
14.	चित्र कहानी द्वितीय क्रमांक	20-21
15.	कृषि संस्कृति और आत्मनिर्भर भारत	22
16.	आत्मनिर्भर भारत	23-24
17.	आत्मनिर्भरता एक जीवन पद्धति	25
18.	पत्र लेखन स्पर्धा प्रथम क्रमांक	26
19.	पत्र लेखन स्पर्धा द्वितीय क्रमांक	27
20.	पत्र लेखन स्पर्धा तृतीय क्रमांक	28
21.	टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रथम क्रमांक	29-30
22.	टिप्पण एवं प्रारूप लेखन द्वितीय क्रमांक	31
23.	टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तृतीय क्रमांक	32
24.	पारपत्र सेवा केंद्र, सोलापुर का सौंदर्यीकरण	33
25.	सद्भावना दिवस	33
26.	स्वतन्त्रता दिवस	34
27.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	35
28.	राष्ट्रीय एकता दिवस	36
29.	संविधान दिवस	36
30.	स्वच्छता पखवाड़ा	37
31.	गणतन्त्र दिवस	38
32.	सेवानिवृत्ति	39
33.	प्रतिनियुक्ति	40

बेटी बचाओ

विनोद मधुकर कुटे,
सहायक अधीक्षक

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:
यत्रै तास्तु ना पूज्यंते सर्वास्त त्राफला क्रिया:"

हमारे भारतवर्ष की गौरवशाली परंपरा अनुसार नारी को सन्माननीय तथा आदरणीय कहां गया है। भगवान ने भी नारी शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। तभी तो हम अपनी मां दुर्गा को रक्षा मंत्री, मां लक्ष्मी को वित्त मंत्री तथा मां सरस्वती को शिक्षा मंत्री के रूप में माननीय किया गया है। लेकिन आज इस कलयुग की घोर विडंबना है कि यही नारी आज चिल्लाकर कह रही है,

"मैं हूं माता मैं हूं भगिनी, मैं हूं अर्धांगिनी, मैं हूं दुर्गा फिर भी आज मेरी आवाज को कि में ही क्यों बंद की जाती है मां! बोलना मां!"

आज यह प्रश्न सिर्फ बेटी को जन्म देने वाली मां से ही नहीं बल्कि उन एकसौ पच्चीस करोड़ भारतीयों से है जो आज भी स्त्री शक्ति के अस्तित्व को पहचान नहीं पाए हैं। और स्त्री विरहित समाज की ओर बढ़ने की कतार में है। यही हमारे भारतवर्ष का ज्वलंत सत्य हैं। आज देश के सामने विकट समस्या है, लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा कम होता जा रहा है। २१ वीं सदी में स्त्री के उपेक्षा की शुरुआत उनके जन्म से पहले ही मां कोक में ही शुरू हो जाती है। क्योंकि आजकल अल्ट्रासोनोग्राफी जैसी मेडिकल साइंस में वरदान साबित हुई तकनीकीयों का गलत इस्तेमाल ने ऐसी विचारधारा वाले लोगों को श्री भ्रूण हत्या करने का एक आसान और कारगर रास्ता दे दिया है। परिणामस्वरूप पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या में भारी गिरावट आने लगी है। महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध, दहेज, बलात्कार, गरीबी, अशिक्षा, लिंग भेदभाव, लड़कों को परिवार का वंश तथा उत्तराधिकारी समझना जैसी लघु मानसिकता यह इस भ्रूण हत्या का मूल कारण है।

सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए लिंग समानता तथा लड़कियां भी लड़कों की तरह महत्वपूर्ण है, यह केवल एक परिवार का दीपक नहीं तो दो परिवारों की रोशनी होती है। लड़का तो भाग्य से प्राप्त होता है, लेकिन लड़कियां सौभाग्य से प्राप्त होती है। यह जागरूकता लाना आवश्यक है। स्त्री भ्रूण का तिरस्कार करने वाले यह नहीं समझ पाते।

“मातृशक्ति यदि नहीं बची तो, बाकी यहां रहेगा कौन? प्रसव वेदना, लालन पालन, सब दुख दर्द सहेगा कौन?
मानव हो तो दाने बता को, त्यागो फिर यह उत्तर द, इस नन्ही सी जान के दुश्मन, को इंसान कहेगा कौन?”

बेटियों को कम समझनेवाले करने वाले जरा अपनी मां की तरफ देखो, यह वही है जिसने तुम जैसों को जन्म देकर इतना बड़ा बनाया और आज तुम ही उसके अस्तित्व को मिटाने चले हो। कन्या भ्रूण हत्या एक बड़ा ही घिनौना अपराध है। यह करके मनुष्य अपना आज और कल दोनों को अंधकारमय बना रहा है. नारी त्याग समर्पण की मूर्ति है बेटी बनकर मां बाप से, बहन बनकर भाई से, पत्नी बनकर पति से और मां बनकर बच्चों से निरपेक्ष प्रेम करती हैं।

भारत सरकार ने भ्रूण लिंग निदान पर बंदी लगाकर तथा 22 जनवरी 2015 को "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान चलाकर बहुत अच्छा कदम उठाया है। हमारा ध्येय हो की हम हमारी इन प्यारी दुलारी बेटियों को अच्छा स्वास्थ्य शिक्षा तथा संस्कार दें। इन परियों को खुले आसमान में उड़ने दे। न जाने इनमें से कितनी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई हो, अहिल्याबाई होळकर हो, सावित्रीबाई फुले हो या फिर आज की लता मंगेशकर, पी.टी. उषा हो, पी.वी. सिंधु और साक्षी मलिक, कल्पना चावला हो.

हम आशा करेंगे कि आने वाले दिनों में सामाजिक आर्थिक कारणों की वजह से किसी भी मां की कोख को कब्र नहीं बनाया जाएगा। अशिक्षित असुरक्षित नहीं रहेगी बेटी तथा लैंगिक भेदभाव नहीं होगा, नहीं सामना करेगी बलात्कार का। बेटी को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं उसे सन्मान से जीने के लिए काबिल बनाना तथा उचित शिक्षा से सुसंस्कृत करना प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य होगा।

"बेटी बिना नहीं सजदा घरौंदा, बेटी ही संस्कारों का परिंदा,
अगर दोगे उसे भी खुला आसमान, तो बेटी भी बढ़ाएगी परविार का नाम।"

★★★

विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व

संतोष सुहास सदरे
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा मृत्यु को गोद में धड़ाधड़ चला जा रहा है। मनुष्य ने मनुष्य को अपने स्वार्थी से जकड़ लिया है। उसे आज कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है। उसे केवल स्वार्थ दिखाई दे रहा है। वह इस स्वार्थ की पूर्ति के लिए आज भयानक और कठिन अस्त्र शस्त्रों की होड़ लगाए जा रहा है। आज इसीलिए मनुष्य सर्व विनाश के लिए अनुबम, परमाणु बम आदि बम बनाकर के अपनी अपार शक्ति का परिचय दे रहा है। वह अशांत और भयानक वातावरण का निर्माण करने में लगा हुआ, सब कुछ भूल चुका है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है? इस प्रकार संपूर्ण विश्व एक बहुत बड़ी अशांति के दौर में पहुंच चुका है।

आज विश्व शांति की आवश्यकता बहुत अधिक जोर से तेज हो रही है। इस अशांति के कारण कई है। इनमें से मुख्य कारण यह भी है कि आज विश्व के अनेक राष्ट्र एक दूसरे निर्बल और शक्तिहीन राष्ट्र को अपने चंगुल में फंसा कर रखने के लिए भारी उद्योग किया करते हैं। इसके लिए वे अपनी निजी शक्ति और आवश्यकताओं को बढ़ाने ही जा रहे हैं। इसके साथ ही अपने संपर्क को अन्य शक्तिहीन और छोटे राष्ट्रों के प्रति उकसाने या उभारने की कोशिश में बराबर लगे रहते हैं। इस प्रकार से आज पूरा विश्व कई भागों में बटा हुआ परस्पर विनाश के गर्त में पहुंचने के लिए नित्य उपयोग करते हुए दिखाई देता है। इसलिए आज विश्व को शांति की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

विश्व शांति कैसे और किस प्रकार से हो सकती है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस विषय के लिए हम यह कह सकते हैं कि विश्व शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। भाईचारे, मेल मिलाप की भावना और परस्पर हित चिंतन की भावना विश्व शांति की दिशा में महान कदम और सार्थक कार्य होगा। परस्पर सुख-दुख की भावना और कल्याण स्थापना की भावना विश्व शांति के लिए ठोस कदम होगा। विश्व शांति के लिए अपने ही समाज को समझना और अपने ही समान आचरण करना एक ठोस और प्रभावशाली विचार होगा। अगर इस तरह की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्राणी के मन में उत्पन्न हो जाएगा तो किसी प्रकार से विश्व में अशांति और अव्यवस्था की भावना नहीं हो सकती है। बड़ी हुई दुर्भावनाए समाप्त हो सकती है।

विश्व शांति के लिए हमें प्रयास करना चाहिए कि हम भौतिकता के बने जंगल से आध्यात्मिकता के सपाट मैदान की ओर लेट जाए। इस अर्थ में हमें अपने पुरातन काल के विषयों की शिक्षा अलौकिक और दिव्य जीवन संदेश को समझना होगा। उनका हमें अनुसरण करना होगा। विश्व शांति के प्रयास में हमें महान दार्शनिकों और भगवान बुद्ध के जीवन सिद्धांतों और आचरण ओं को अपनाना होगा। उनके अनुसार चलना होगा। इसके परिणामों को हमें समझ करके दूसरे को इससे प्रभावित करना होगा। तभी विश्वशांति का सार्थक और ठोस प्रयास होगा।

★★★

कविताएं

करोना

शुक्र कर भगवान का, तू अपने घर में है
पूछो उससे जो, अटका सफर में है।

यहां बाप की शक्ल नहीं देखी, आखरी वक्त में कुछ लोगों ने
बेटा अस्पताल में, और बाप कब्र में है।

तेरे घर में राशन है, साल भर का
तू उसका सोच, जो वक्त की रोटी के फिक्र में है।

तुम्हें किस बात की, जल्दी है गाड़ी में घूमने की
अब तो सारी कायनात ही सब्र में है।

अभी भी अगर किसी भ्रम में हो तो मत रहना
इंसानों की नहीं सुनती, आजकल कुदरत अपने सूर में है।

संतोष सुहास सदरे
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

★★★

गुमनाम

हम शत बार नतमस्तक हैं उस हर अजनबी वीर मां की चरणों में
जिसने अपने सपूत को भारत मां की आंचल में सौंपा था।
हर खुशी त्यौहार में हम सदा स्मरण कर
ऋणी रहेंगे उस गुमनाम परिवार का जिसने
पिता पति न्योछावर किया है देश प्रेम में।
हम ह्रदय से प्रणाम करते हैं उन सैकड़ों
अपरिचित अभिनंदन के जीने की दहाड़ की।
गूंज हमारे कानों में ना सुनी होंगी लेकिन
हमारे दुश्मनों की रूह जरूर कप कप आई होगी।
हमारे ह्रदय से निकले दो आंसू के फूल अर्पित है
उस हर अज्ञात अविदित वीरों के नाम ।
जिनके पवित्र रक्त से लिखा है इस
देश का गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास
भविष्य के पन्नों पर है गुमनाम ।
प्रसिद्ध नहीं है अनेक वीर वीरांगनाओं के नाम
लेकिन मित्रों... व्यर्थ नहीं है उनके बलिदान ।
सदा स्मरण करेंगे हम इन अपरिचित वीरों के
सर्वश्रेष्ठ योगदान ।

विनोद मधुकर कुटे,
सहायक अधीक्षक

स्वच्छता पखवाड़ा

विदेश मंत्रालय के निर्देशानुसार दिनांक 01-15 जनवरी 2020 तक क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, सभी पारपत्र सेवा केंद्र एवं सभी डाकघर पारपत्र सेवा केन्द्रों में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान स्वच्छता पखवाड़ा संबंधी बैनर बनवाकर लगवाए गये। स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान स्वच्छता से संबन्धित कार्यक्रम जैसे श्रमदान, प्लास्टिक का कूड़ा समेटना, परिसर पूरी तरह स्वच्छ रखना, विद्यालयों में जाकर स्वच्छता तथा सेनिटेशन के प्रति जागरूकता फैलाना इत्यादि कार्यक्रम शामिल किए गये।

स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय पुणे द्वारा पुणे जिल्हा के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा 5-8 तक के विध्यार्थियों के लिए निबंध लेखन एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

निबंध लेखन हेतु विषय

1. नदी की आत्मकथा
2. नदियों का मानवीय जीवन में योगदान
3. मानव का पर्यावरण के स्वास्थ्य में योगदान
4. पर्यावरण संबंधी कर्तव्य एवं कानून

चित्रकला हेतु विषय

1. हमारा पर्यावरण एवं जीवन
2. दैनिक जीवन एवं पर्यावरण
3. मानव एवं जल जीवन

प्रत्येक एवं सभी विद्यालय के विजेताओं को प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार प्रोत्साहन राशि भेट की गयी।

इसके अतिरिक्त वन विभाग पुणे एवं जुन्नर में वृक्षारोपण हेतु अनुरोध किया गया।

- दिनांक 01.01.2020 को कार्यालय में अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्र (वेस्ट मैनेजमेंट प्लांट) का अनावरण किया गया जिसमे कि जैविक कचरे को खाद में बदलने की क्षमता है। सभी कर्मचारियों ने पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने हेतु प्रतिज्ञा ली।
- दिनांक 02.01.2020 को क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी ने पुणे स्थित शंकरराव बुट्टे पाटिल विद्यालय, जुन्नर का दौरा किया तथा हमारे जीवन में सतत विकास और स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूकता के बारे में विद्यार्थियो को संदेश दिया। क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी द्वारा वृक्षारोपण कर बच्चों के इसके प्रति जागरूक किया।
- दिनांक 03.01.2020 को क्षेत्रीय पारपत्र अधिकारी ने पुणे स्थित वी. के. मते हाइ स्कूल का दौरा किया तथा कक्षा 05-10 के छात्रों को शुद्ध एवं स्वस्थ्य पर्यावरण के महत्वता तथा हमारे जीवन में शुद्धह हवा एवं पानी की जरूरत के बारे में उनसे संवाद किया। छात्रों ने भी निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया।

★★★

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

श्रुतिका दिनकर वाघोले
(प्रथम क्रमांक)

रिद्धी कैलास जाधव
(द्वितीय क्रमांक)

पंचक्रोशी हायस्कुल, दारुम्बरे

रिया गोपीनाथ पानमंद
(तृतीय क्रमांक)

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

कृष्णा प्रवीण ठाकरे प्रथम क्रमांक

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

ओम भालेकर

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

अदिती हर्षल बागमार

जान्हवी बेलगावकर

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

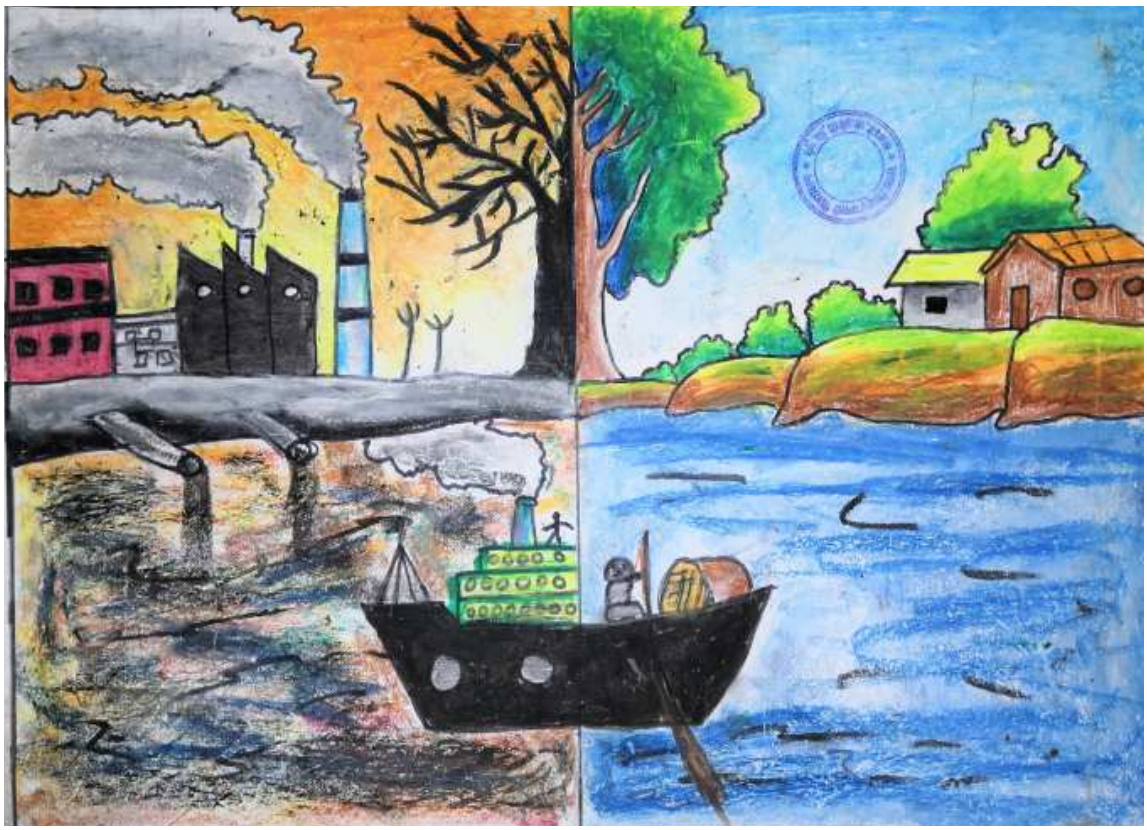

साक्षी जयवंत फदाले

ओमकार रुपेश माने

स्वच्छता पखवाड़ा: चित्रकला स्पर्धा

नीलू सुखलाल जयस्वाल

गौरी राजेश कुमार सिंह

रेशमी राम

★★★

नदी की आत्मकथा

सीमा पुरोहित
गोदावरी विद्यालय, कक्षा: आठवीं

कैसे हो आप आप? जानना चाहते हो मेरे बारे में? क्या मैं अपना परिचय दू? तो चलिए अब मैं आपको अपने बारे में बताती हूं...

मैं हूं नदी। मुझे कई नामों से जाना जाता है। झरना नदी, जलवाहिनी, तरीनी आदि। मेरा जन्म हिमालय से हुआ। वहां से झरना, फिर आगे जाकर नदियों में मिल जाना। मेरी राह में कई अवरोध आते हैं। पर मैं बहना नहीं छोड़ती। बहती रहती हूं। पत्थर, छोटे-छोटे पौधे, कचरा आदि। पर मैं रुकती नहीं। मुझे आगे जाकर मेरे भाई बहन भी मिलते हैं। वैसे जिस तरह मैं नहीं रुक सकती उसी तरह मनुष्य को भी नहीं रुकना चाहिए। जीवन में कई कठिनाइयां और मुश्किलें आती है। उनसे पीछे नहीं हटना चाहिए। मुझ में भी भावनाएं है। मैं भी एहसास कर सकती हूं। परंतु मनुष्य यह बात नहीं समझ पाएगा। जब किसी की मृत्यु होती है और चिता को जलाकर उसकी अस्थियां नदी में डुबो देते हैं, तो मुझे एहसास होता है कि जिससे हम इतना प्यार करते हैं मरने के बाद उसको जला देते हैं। मनुष्य मुझे देवी की तरह पूजता है। मुझे देवी मानता है। तो फिर देवी को गंदा क्यों करता है? क्यों इसमें कचरा कूड़ा डालता है? मनुष्य स्वार्थी होता है। पर हम नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। पर मैं नहीं। क्योंकि प्रकृति जो हमारी मां है, उसने भी तुम इंसानों को बहुत कुछ दिया है। पर वह इसका हिसाब नहीं लेती। झाड़, फूल, फल यह सब प्रकृतिने ही तुम्हें दिया है। पर मुझसे यह सब नहीं देखा जाता। क्योंकि जैसा तुम हमारे साथ करते हो वैसा हमें भी करना चाहिए।

मेरे कारण ही तुम सबके घर में पानी की सुविधा हो पाई है। मेरे वजह से ही तुम सब के घर में पानी आता है। जिससे तुम सब अपने दिन की सभी कार्यों को पूर्ण करते हो। पेड़ पानी के कारण बड़े होते हैं। कपड़े मेरे कारण धो लेते हैं आदि। परंतु इंसान को यह बात कौन समझाए? वह तो अपना ही देखता है। वह मुझ में प्लास्टिक, कचरा डालता हैं। गांव के लोग भैंसों को नहलाते हैं। नहाते बर्तन धोते हैं। पर मैं कुछ नहीं बोलती। क्योंकि प्रकृति ने हमें ऐसा ही बनाया है।

मुझे अच्छा तब लगता है जब छोटे बच्चे आकर मुझ में अपने नन्हें हाथों से खेले, पानी उछाले। कभी-कभी मेरी गति धीमी हो जाती है। कभी ज्यादा तेज तो कभी शांत गति से मैं बहती हूं। मुझे बहुत दुख होता है, जब लोग मुझे कहते हैं कि मैं प्रभावशाली हूं। कहते हैं कि मेरी वजह से नुकसान हुआ। परंतु जब मेरी वजह से जो उन्हें फायदे होते हैं। वह उन्हें याद नहीं रहता। जल की कमी इसलिए होती है, क्योंकि मनुष्य मुझे गंदा करता है। फिर वह जल ना तो उपयोग में लाया जा सकता है और पानी भी नहीं पी सकते। मनुष्य को मैं कैसे समझाऊं कि जिन्हें वह गंदा करते हैं वही ज्यादा महत्वपूर्ण है। इंसानों की भावनाओं को हर कोई समझ लेता है परंतु मुझे कोई नहीं इंसान बोलते हैं। मैं बोलती नहीं पर मुझ में और मनुष्य में बहुत बड़ा फर्क है और वह यह कि मैं स्वार्थी नहीं हूं। मुझ में कई प्रकार के प्राणी भी रहते हैं। परंतु मैं उन्हें कुछ नहीं कहती। चलती रहती हूं। मुझे कोई रोक नहीं सकता। मनुष्य को मुझ में से मछली, कीड़े, केकड़े आदि वस्तुएं मिलती है। सजाने के लिए सामान पर जब मैं जरूरत पूरी होने पर मुझे गंदा करते हैं। मनुष्य के लिए कई सुविधाएं उपलब्ध है। पर मेरे लिए कुछ नहीं मुझे भी दर्द होता है। एहसास होता है। मुझ में भी भावनाएं होती है। पर समझने वाला कोई नहीं।

जब मनुष्य मरता है तब उसकी इच्छाएं भी मरती है। उसी तरह मेरी इच्छाएं हैं कि मैं अच्छी गति से बहू। साफ़ रहू। मेरा पानी स्वच्छ रहे। पर यह तब तक नहीं हो होगा जब तक मनुष्य यह समझेगा नहीं। मुझ पर तो कई कविताएं बनी है। हर एक चीज मायने रखती है। जब मैं इंसान को इतना सब कुछ दे सकती हूं तो वह मुझे स्वच्छ नहीं रख सकते।

मुझे इतना गंदा मत करो। मैं मनुष्य को यह कहना चाहती हूं कि मुझसे कुछ सीखो कि मेरी मार्ग में कई कठिनाइयां आती है। पर मैं रुकती नहीं। उसी तरह आपके जीवन में भी कई कठिनाइयां आएगी इससे घबराना मत। कई मनुष्य असफलता के कारण निराश होते हैं। और आगे बढ़ना छोड़ देते हैं। पर मैं नहीं छोड़ती। क्योंकि वह कठिनाइयां ही हमें सिखाती है।

तो अब मैं इतना ही बताऊंगी कि आप जो मुझ तू मुझे बहुत खुशी मिलेगी। जब इतना सब कर सकती हूं तो आप मेरे लिए कुछ भी नहीं कर सकते। जब तक आप लोग मुझे स्वच्छ नहीं रखेंगे तब तक आप स्वस्थ नहीं रहेंगे।

बस इतना ही कहना चाहती हूं। आगे तुम मनुष्य ही जानो। चलो चलती हूं। बहुत बताया आप अपने बारे में। अगर यह जानकर आपके अंदर कुछ परिवर्तन आ जाए।

★★★

पर्यावरण कर्तव्य और कानून

भूमिका प्रकाश कदम
कक्षा सातवीं, शाळा क्रमांक ५४ जी

शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति संकल्प के अनुपालन के रूप में विश्वविद्यालयों में उच्चतम स्तरों तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा के लिए पाठ्य सामग्री सुलभ कराने के उद्देश्य से भारत सरकार ने इन भाषाओं में विभिन्न विषयों के मानक ग्रंथों के निर्माण अनुवाद और प्रकाशन की योजना परिचालित की है। हिंदी भाषी राज्यों में इस योजना के परिचालन के लिए भारत सरकार ने शत-प्रतिशत अनुदान से राज्य सरकार द्वारा स्वायत्तशासी निकालो की स्थापना हुई है। बिहार में इस योजना का कार्यान्वयन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के तत्वावधान में ही रहा है।

प्रस्तुत ग्रंथ शिक्षा एवं पर्यावरण डॉ. वीरेंद्र पांडेय की मौलिक कृति का प्रथम संस्करण है। जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग के शत-प्रतिशत अनुदान से बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

महात्मा गांधी ने जिस भारत का अपना सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं थी। बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना थी। महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर मां भारती को आजाद कराया। इस वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह के दो घंटे इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा। मैं गंदगी करूंगा ना किसी और को करने दूंगा। इस विचार के साथ गांव-गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा। मैं आज जो शपथ ले जा रहा हूं वह अन्य 100 घंटे इसके लिए प्रयास करूंगा।

संयुक्त राष्ट्र इंक्वायरमेंट प्रोटेक्शन एजेंसी ने 1970 के दशक में सबसे पहले कार्बन ट्रेडिंग की थ्योरी प्रस्तुत की थी। सरकारी नियामक एजेंसी प्रत्येक उद्योग या एजेंसी के लिए गैसों के उत्सर्जन की सीमा तय कर देती है, जो टनो में होती है। यदि कोई कंपनी निर्धारित सीमा से कम कार्बन उत्सर्जन करती है, तो उसे कार्बन क्रेडिट मिलता है। जबकि अधिक उत्सर्जन करने वाली कंपनी को पेनल्टी लगने या लाइसेंस रद्द होने का खतरा रहता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रति टन कार्बन क्रेडिट की कीमत 15 से 20 डॉलर है। भारत में कार्बन ट्रेडिंग के लिए पर्यावरण मंत्रालय ने ऐसे 150 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है।

कार्बन क्रेडिट से तात्पर्य किसी एक संस्था व्यक्ति या उत्पाद द्वारा किए जाने वाले कुल कार्बन उत्सर्जन से हैं। किसी व्यक्ति संस्था या वस्तु के कार्बन फुटप्रिंट का आकलन हरित गृह गैसों के उत्सर्जन के आधार पर किया जा सकता है। इकोलॉजिकल फुटप्रिंट काही एक आवश्यक होते हुए भी कार्बन फुटप्रिंट जीवन चक्र आकलन का हिस्सा अधिक है। और इसमें पर्यावरण की वायु प्रदूषण होने के लिए हमें पेड़ों को लगाना चाहिए। हम सब यह मिलकर करेंगे और हम प्रदूषण होने की अच्छी तरह से ध्यान रखेंगे। और इस पर्यावरण को अच्छा बना लेंगे, तो हमें कोई कायदा करने का मतलब नहीं होगा।

और कम से कम प्रदूषण ना होने की जिम्मेदारी निभानी चाहिए तो हमारा देश आगे सफल होगा प्रदूषण रहित होगा।

नदिया मानव जीवन में योगदान देती है

स्नेहल संतोष उंबरदंड, कक्षा आठवीं
राजा शिवछत्रपती मा. विद्यालय, तळवडे

सद्गुरु बना रहे कि भारत में नदियों को
भौगोलिक अस्तित्व की तरह देखते के बजाय
जीवन देने वाले देवी-देवताओं की तरह क्यों देखा
जाता था और यह नजरिया कैसे हमारी
खुशहाली के लिए महत्वपूर्ण है।

अगर आप इस संस्कृति में पूछे जाने वाले लोगों को देखें चाहे वह शिव हो राम हो या कृष्ण हो। यह सब लोग जिनमें कदम भी ज्यादा मुश्किलों और चुनौतियों से गुजरे। हम उनकी पूजा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके सामने जिस भी तरह की चुनौतियां पेश की उनका भीतरी स्वभाव कभी नहीं बदला। हम उनकी पूजा करते हैं क्योंकि वह इन चीजों से अछूते रहे। कई मायनों में एक नदी इसी को दर्शाती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि नदी को किस तरह के लोग होते हैं। वह हमेशा पवित्र रहती हैं क्योंकि प्रवाह ही उसकी प्रकृति है।
"इस संस्कृति में हम नदियों को सिर्फ जल के स्त्रोतों के रूप में नहीं देखते
हम उन्हें जीवन देने वाले देवी-देवताओं के रूप में देखते हैं "
एक विचारशील मन के लिए जो अपने तर्क की सीमा हो तक ही सीमित है। यह बात मूर्खतापूर्ण या बहुत ही बचकानी लग सकती है। एक नदी बस एक नदी है यह देवी कैसे है। यदि आप ऐसे बहुत व्यक्ति को 3 दिन के लिए पानी दिए बिना कमरे में लॉक कर दे और उसके बाद उसे एक गिलास पानी दिखाएं। तो वह उसके आगे झुकेगा नदी के आगे नहीं। सिर्फ एक गिलास पानी के आगे हम जिसे पानी हवा भोजन कहते हैं, हम नदियों को कभी भी केवल भौगोलिक अस्तित्व के रूप में नहीं देखा। हमने हमेशा उन्हें जोकन दायक तत्वों के रूप में नहीं देखा है। क्योंकि हमारे शरीर की 70% से अधिक मात्रा पानी ही है। जब भी हम जीवन की तलाश करते हैं, हम पहले पानी की बूंद की तलाश करते हैं।
आज हम दुनिया में चिकित्सा के जैसे बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहे हैं। जैसे कि हम सोच रहे हो कि सभी को किसी ना किसी दिन गंभीर रूप से बीमार पड़ना है। एक समय था जब पूरे शहर के लिए एक चिकित्सक होता था। और यह पर्याय था आज हर गली में 5 डॉक्टर है और यह पर्याय नहीं है। इससे पता चलता है हम कैसे हैं। जब हम अपनी जिंदगी को बनाने वाले तत्वों का सम्मान नहीं करते।

विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व

आकाश कांबळे,
डीईओ

विश्व शांति सभी देशों और या लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता शांति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूर्ण पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक माध्यम है। जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिए इच्छा से सहयोग करते हैं। ताकि युद्ध को रोका जा सके। हालांकि कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग विश्वशांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्मे के संदर्भ में किया जाता है।

विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है? इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। इसमें से कई नीचे सूचीबद्ध है। विश्व शांति की जा सकती है, जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना पहचाना है। इसलिए पुनः प्रयोजन स्त्रोत का उपयोग करने वाली प्रौद्योगिकी विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

"बिना सूत्रों वाले दावों पर भरोसा करने से पहले सावधानी बरतें"

शांति का आधार शिक्षा डॉ. रामजी सिंह का कहना है कि, शांति जीवन की आधारभूत आशंका है। इसलिए अशांति के आयोजन में लगा रहा है। यही कारण है अशांति कभी धर्म के रथ पर आती है। तो कभी राजनीति की सखी बनकर प्रस्तुत होती है। यही कारण है कि विश्व मानवता हिंसा से लुहलुहान हो चुकी है। और लगभग 20000 छोटे बड़े युद्ध के बाद भी नीशस्त्र काल एक दिवास्वप्न हो रहा है। और अभी भी परमाणु बम और आतंकवाद के लिए जा रहे प्रयास वास्तव में एक आडंबर प्रतीत होता है। या तो शांति संकल्प एक प्रवचना हो तो क्या मान लिया जाए। जैसे बाघ और शेरों के लिए पशु और मनुष्य का शिकार उनकी प्रकृति का अनिवार्य अंग है। निराशावाद भी इसमें कमाल का है।

अतः देश की शिक्षा व्यवस्था को जीवन अभिमुख एवं शांति मुल्क बनाना राष्ट्र की प्राथमिकता होनी चाहिए। सौभाग्य से देश में लगभग 75 लाख शिक्षक और 6 करोड़ विद्यार्थी यदि इनका उपयोग राष्ट्र निर्माण और शांति सद्भावना के लिए करते हैं तो शांति और व्यवस्था के अभाव में विकास के रथ के पहलू भी अवरुद्ध हो जाएंगे। और जिस प्रकार आज पाकिस्तान अपनी आजादी साथ अपनी अस्मिता के खतरे में जूझ रहा है। वही बदनसीबी हमको भी हो सकता है। शांति, शिक्षा और शांतिरोध पर आज पाश्चात्य देशों में लगभग दो हजार व छोटी बड़ी संरचना कार्यरत है। भारत जैसे बहुपंथिक तथा बहुभाषी, बहुआयामी देश के लिए विभिन्न नेताओं में एकता को प्रस्तावित करना उसके लिए जीवन और मरण का प्रश्न है। अतः शांति की साधना न तो महावीर बुद्ध और महात्मा गांधी की निर्जीव बल्कि यह राष्ट्र की सुरक्षा विकास और प्रगति के लिए आवश्यक है।

सामाजिक कारण है कि देश के 78 करोड़ लोगों की दैनिक आमदनी मात्र ₹18 है और राष्ट्रीय विकास के राज्य प्रसाधनों में देश के केवल 10% लोग सुखोपयोग कर रहे हैं। इसलिए माओवाद और नक्सलवाद देश के 129 जिलों में आगे बढ़ रहा है। बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा और आंध्र प्रदेश तथा केरल तक माओवादों का लाल गलियारा हमें यह संकेत दे रहा है, कि सच्ची क्रांति के लिए हर हाथ में आर्थिक विषमता 10% से अधिक नहीं होनी चाहिए।

हमारी पंचवर्षीय योजना यह अब तक राष्ट्रीय और जनता की योजना नहीं की जा सकती। इसलिए भूख, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय विधि होती है। इसलिए हमें विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व है।

सांप्रदायिक सौहार्द सप्ताह निबंध लेखन प्रतियोगिता प्रथम क्रमांक

★★★

विश्व शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व

अमरेश कुमार
कनिष्ठ पारपत्र सहाय्यक

आज हम कह सकते हैं पूरे विश्व में पूरी तरह से शांति स्थापित तो नहीं हो पाई है। परंतु बहुत हद तक शांति स्थापित की जा चुकी है। क्योंकि हम बचपन से पढ़ते एवं सुनते आ रहे हैं कि विश्व में 2 विश्व युद्ध हो चुके हैं एवं जैसे जैसे लोग शिक्षित होते गए विश्व का तीसरा युद्ध टलता गया है।

अतः हम कह सकते हैं कि लोगों को शिक्षित होने के बाद से विश्व में शांति स्थापित होने लगी है। और इसका अंदाजा या उदाहरण स्वरूप समझ सकते हैं। जैसे हमारे आसपास अगर शिक्षित लोग रहते हैं। तो देखा जाता है कि एक दूसरे के साथ लड़ना झगड़ना रहता है। एवं समाज में अशांति फैलाता रहता है और अच्छे से समझने के लिए हम अपने देश के चारों तरफ जितने भी देश है उन सभी में जो भी अशिक्षित है। जैसे पाकिस्तान इसका ताजा उदाहरण है। वहां के लोगों को दिमाग वास करने गलत राह पर भेज दिया जाता है। गोला-बारूद लेकर एवं विश्वशांति फैलाता है। विश्व में अशांति को कम करने एवं विश्व स्तर पर इसे रोक आम के लिए दूसरे विश्व युद्ध के बाद कुछ शिक्षित देशों के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री द्वारा अक्टूबर 1945 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। जिससे विश्व में शांति का माहौल बना रहे। एवं वर्ष 2002 से हर साल 21 सितंबर को विश्व शांति दिवस मनाया जाता है। हम यह भी देखते आ रहे हैं कि सरकार द्वारा समय-समय पर शिक्षा पर कई तरह से बल दिया जा रहा है। क्योंकि जिस घर में अशिक्षित लोग रहते हैं तो उस घर में हमेशा और शांति का वातावरण बना रहता है। जिससे उस घर का विकास नहीं हो पाता है। इसलिए सरकारद्वारा लोगों को कई तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं, कि कम से कम हर आदमी शिक्षित हो। जिससे परिवार समाज गांव देश एवं विश्व में शांति बनी रहे। पहले के समय में लोग उतने शिक्षित नहीं थे। जितने कारण विश्व में बहुत अशांति बनी रहती थी। जैसे जैसे लोग शिक्षित होते गए शांति का माहौल बढ़ता गया। इससे हम और स्पष्ट कर सकते हैं कि जिन देशों में शिक्षा का स्तर ऊंचा है, उस देश में भाईचारा एवं प्रेम अधिक है। एवं जिन देशों में शिक्षा का स्तर नियम है, उन देशों में एक दूसरे से लड़ते रहते हैं। एवं आक्रमण करते हैं। जिससे नुकसान उठाना पड़ता है। अभी अभी इसका एवं और उदाहरण देखने को मिलता है। नेपाल जो कि चीन द्वारा उकसाने पर भारत से वर्षों से मित्रता बना हुआ था उसे खराब कर रहा है।

अतः हमने देखा कि विश्व या घर में शांति स्थापित तभी संभव है जब लोग शिक्षित हो, नहीं तो अशांति पैदा होती है। इसलिए विश्व में शांति तभी बनी रहेगी जब लोग शिक्षित रहेंगे। अतः विश्व में शांति स्थापित करने में शिक्षा का महत्व उतना ही है जितना जीवन जीने के लिए ऑक्सीजन का है। इसलिए हर मनुष्य को सरकार द्वारा हर देशों में कम से कम प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर देना चाहिए। ताकि विश्व में शांति बनी रहे एवं कोई अशांति पैदा ना हो।

★★★

सांप्रदायिक सौहार्द सप्ताह निबंध लेखन प्रतियोगिता द्वितीय क्रमांक

सांप्रदायिक सौहार्द तथा विश्व शांति को प्राप्ति

रंगलाल मीणा,
सोलापुर सेवा केंद्र

प्रस्तावना:

संप्रदाय का अर्थ है विशेष रूप से देने योग्य सामान्य रूप से नहीं। अर्थात हिंदू मतावलंबी के घर में जन्म लेने वाले बालक को हिंदू धर्म की हो ही शिक्षा मिल सकती है। दूसरे को नहीं। इस प्रकार से ही सांप्रदायिकता का अर्थ हुआ। एक पंथ, एकमत, एक धर्म या एक वाद। न केवल हमारा देश ही अपितु विश्व के अनेक देश भी सांप्रदायिक है। अतः वह भी सांप्रदायिकता है। इस प्रकार सांप्रदायिकता का विश्वव्यापी रूप है। इस तरह यह विश्व चर्चित और प्रभावित है।

सांप्रदायिकता के दुष्परिणाम:

सांप्रदायिकता का अर्थ आज पूरे हो गए हैं। इससे आज चारों ओर भेदभाव, नफरत और कटुता का जहर फैलता जा रहा है। सांप्रदायिकता से प्रभावित व्यक्ति समाज और राष्ट्र दोनों को नुकसान पहुंचाता है। धर्म और धर्म नीति जब मदांधता को धारण कर लेती है, तब वहां सांप्रदायिकता उत्पन्न हो जाती है। इस समय धर्म धर्म नहीं रह जाता है। वह तो काल का रूप धारण करके मानवता की ही समाप्त करने पर तुल जाता है। फिर नैतिकता, उदारता, सरलता आदि सात्विक और दैवीय गुणों और प्रभावों को कहीं शरण नहीं मिलती है। सत्कर्तव्य जैसे निरिह बनकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। परस्पर संबंध कितने गलत और कितने नारकीय बन जाते हैं। इसकी कहीं कुछ न सीमा रह जाती है और न कोई अनुमान। हत्या, अनाचार, दुराचार आदि पार्श्विक दुष्ट प्रवृत्तियां हुंकारने लगती है। परिणामस्वरूप मानवता का कहीं कोई चिन्ह नहीं रह जाता है। इतिहास साक्षी है कि सांप्रदायिकता की भयंकरता के फलस्वरूप ही अनेकानेक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भीषण रक्तपात हुआ है। अनेक राज्यों और जातियों का पतन हुआ है। अनेक देश सांप्रदायिकता के कारण ही पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े गए हैं। अनेक देशों का विभाजन भी सांप्रदायिकता के लेते हुए जहरपान से हुआ है।

सांप्रदायिकता का वर्तमान स्वरूप:

आप हमारे देश भारत में हो नहीं अपितु पूरे विश्व में सांप्रदायिकता का जहरीला सांप फूफा रहा है। हर जगह इसी कारण आतंकवाद ने जन्म लिया है। इससे कहीं हिंदू मुसलमानों ने तो कहीं सिक्खों, हिंदू हो या अन्य जातियों में दंगे फसाद बढ़ते ही जा रहे हैं। ऐसा इसलिए आज विश्व में प्राय: सभी जातियों और धर्मों ने सांप्रदायिकता का मार्ग अपना लिया है। इससे इसके पीछे कुछ स्वार्थी और विदेशी तत्व शक्तिमानी रूप से काम कर रहे हैं।

उपसंहार:

सांप्रदायिकता मानवता के नाम पर कलंक है यदि इस पर यथाशीघ्र विजय नहीं पाई गई तो यह किसी को भी समाप्त करने से बाज नहीं आएगा। सांप्रदायिकता का जहर कभी उतरता नहीं है। अतः हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि, यह कहीं किसी तरह से पहले हो नहीं हमें ऐसे भाव पैदा करने चाहिए। जो इसको कुचल सके।

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा
तथा
चाहे जो हो धर्म तुम्हारा चाहे जो भी वादी हो
नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो तुम अपराधी हो...

★★★

सांप्रदायिक सौहार्द सप्ताह निबंध लेखन प्रतियोगिता तृतीय क्रमांक

हिंदी पखवाड़ा

१४ से २८ सितम्बर के दौरान कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया.

इस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा

१४ से २८ सितम्बर के दौरान कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया.
इस कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ

★★★

चित्र कहानी प्रथम क्रमांक

प्रियंका
पीएसपी 2277

तस्वीर क्रमांक 3

तस्वीर क्रमांक 3 को देखने पर तीन चीजों मेरे जहन में आती है। एक तो सभी लोग मिलकर खाना बनाने का काम कर रही है सामूहिक किचन दूसरी बात क्योंकि यह दृश्य में सभी महिलाएं हैं। तो महिला सशक्तिकरण और तीसरा कोरोना महामारी भी आती है।
सामूहिक किचन आज के इस समय में वरदान है। अभी हम लोग कोरोना महामारी के संकट से गुजर रहे हैं। इस तस्वीर में सभी महिलाएं सामूहिक रूप से भोजन बना रही है। जो कि दूसरे लोगों तक पहुंचाया जाएगा। सभी महिलाएं अपना योगदान दे रही है। इस तस्वीर में सभी महिलाओं ने मास्क पहना है। दूर-दूर बैठी है। अपने बालों को ढका है। हाथों में दस्ताने पहन रखा है।
अतः इन्होंने कोरोना महामारी से बचने हेतु सारी सुरक्षा भी अपनाई है। यह खाना सभी जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाया जाएगा। यह तस्वीर हमें कई संदेश देना चाहती है जैसे कि,
आपदा के समय हम सब को मिलकर काम करना चाहिए।
हम महिलाएं भी किसी से कम नहीं है।
हम सब भारतीय मिलकर भारत को फिर से एक नए युग की ओर ले जा सकते हैं। और हम भारतीय इसमें अवश्य सफल होंगे।

तस्वीर क्रमांक 1

तस्वीर संख्या 1 को देखकर लगता है कि भारत के ग्रामीण परिवेश को दर्शाया गया है। इस तस्वीर में महिलाएं और पुरुष दोनों मिलकर काम कर रहे हैं। आज हम आधुनिकता के दौड़ में आगे चले जा रहे हैं। परंतु चाहे हम कितने भी आधुनिक क्यों ना हो जाए हम भारतीयों की जड़े सदैव गांव से जुड़ी रहेंगी। इस तस्वीर में सभी लोग अपने घर से बाहर निकल कर बैठे हैं। कोई खटिया बन रहा है। जो कि एक तरह का कुटीर उद्योग है। गाय, भैंस भी तस्वीर में नजर आ रहे हैं। जो कि बता रहे हैं कि गांव में पशुपालन उद्योग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। पशुपालन उद्योग को बढ़ावा देने से लोगों की आय में वृद्धि हो रही है।
तस्वीर में खुशनुमा माहौल दिखाई देता है। सभी लोग घर से बाहर निकल कर एक साथ बैठते हैं। और हंसी ठहाके लगाते हैं। और छोटे-मोटे काम कर रहे हैं। जैसे घर की महिलाएं चरखा लगाते हुए करती है। पुरुष भी महिलाओं का पूरा सहयोग करते हैं।
आज के शहरी जीवन में यह सब कहीं खो गया है। कुए से पानी भर्ती हुई महिलाएं, दूध से मक्खन निकालती महिलाएं। यह सब दृश्य गांव में देखने को मिलता है।
गांव से जुड़े रहना चाहिए ताकि हम भी इन सभी चीजों का आनंद उठा सके।

चित्र कहानी द्वितीय क्रमांक

विनोद मधुकर कुटे
सहायक अधीक्षक,
पारपत्र कार्यालय, पुणे

चित्र क्रमांक 1 कुटीर उद्योग

भारतीय आर्थिक विकास में लघु एवं कुटीर पैमाने के उद्योगों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लघु पैमाने के उद्योग और कुटीर उद्योग भारत के निर्माण क्षेत्र की संरचना एवं स्वरूप के महत्वपूर्ण भाग है।

भाषा की दृष्टि से यह कुटीर उद्योग एक आम प्रवृत्ति रही है कि कुटीर उद्योग ग्रामीण उद्योग तथा लघु पैमाने की उद्योगों का आशय एक साथ ही समान रूप से लगाया जाता है। जबकि इनमें आधारभूत अंतर है। कुटीर उद्योग किसी एक परिवार के सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है। ना की किसी कारखाने कारखाने में। कुटीर उद्योगों में कुशल कारीगरों द्वारा कम पूंजी एवं अधिक कुशलता से अपने हाथों के माध्यम से अपने घरों में वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इन में पूंजी निवेश नाम मात्र का होता है। उत्पादन भी प्राय: हाथ द्वारा किया जाता है। परंपरागत ढंग से चलने वाला उत्पादन प्रक्रिया में वेतन भोगी श्रमिक नहीं होते हैं। यह पूर्ण या अंशकालीन तौर पर चलाया जाता है। अब इनमें कुशलता एवं परिश्रम के अतिरिक्त छोटे पैमाने पर मशीनों का भी उपयोग किया जाने लगा है।

लघु उद्योगों में आधुनिक ढंग से उत्पादन कार्य होता है। सब वेतन श्रमिकों की प्रधानता रहती है। कुछ ऐसे कुटीर उद्योग भी है जो उत्कृष्ट कलात्मकता के कारण निर्यात भी करते हैं।

भारत में प्राचीन काल से ही कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के भारत आगमन के पश्चात देश में कुटीर उद्योगों तेजी से नष्ट हुए और आधुनिकता के आक्रमण से परंपरागत कारगिरो ने अन्य व्यवसाय अपना लिए। किंतु स्वदेशी आंदोलन द्वारा गांधीजी ने चरखी घर-घर सूत काटने के लिए लोगों को प्रेरित किया और इसके प्रभाव से पुनः कुटीर उद्योगों को बल मिला और वर्तमान तथा भविष्य में आत्मनिर्भर भारत अभियान सहयोग से कुटीर उद्योग आधुनिक तकनीकी के समानांतर भूमिका निभाने की आशा करेंगे।

गांव तथा कस्बों में आटा, चक्की, तेल, मीता, रेशमी व खादी कपड़े फसलों की कटाई, बुनाई, सिलाई, कटाई, सुताई, दरजी बढ़ाई, लोहार धातु कर्म, चमड़े का काम, खेती के कामों के साथ ही गाय, बैल, भैंस, बकरी, मुर्गी या जैसे पशुपालन तथा मत्स्य पालन यह कुटीर उद्योगों की सर्वोत्तम उदाहरण है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के का पूरी दुनिया में कुटीर उद्योगों का स्वरूप भले ही परिवर्तित हुआ हो लेकिन इससे उत्पादन क्षमता में तीव्र वृद्धि हुई है। फलों एवं सब्जियों का प्रसंस्करण इससे लाखों लोगों को व्यक्तिगत स्तर पर रोजगार प्राप्त होता है। सरकारी प्रोत्साहन की सहायता से बेरोजगारों के स्वयं रोजगार प्राप्ति हो सकती है। इससे ग्रामीण युवकों का शहरों की ओर पलायन भी रुक सकता है।

भारत में आधुनिकता के साथ-साथ बड़ी सूझबूझ से हमें अपनी परंपरागत मिली हुई नैसर्गिक साधनसंपत्ती का समझदारी से उपयोग कर इस विरासत को भी प्रोत्साहित कर भारत को विकासशील देश बनाना है।

जय हिंद जय भारत!

★★★

चित्र कहानी द्वितीय क्रमांक

विनोद मधुकर कुटे
सहायक अधीक्षक,
पारपत्र कार्यालय, पुणे

चित्र क्रमांक 3

स्वयं सहायता समूह द्वारा महिला सशक्तिकरण के पहलुओं को समझने का प्रयास तथा भारत जैसे विकासशील देश में गरीबी कम करने तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की व्यापक क्रांति का प्रतीक चित्र क्रमांक 3 प्रस्तुत करता है।

हमारे देश में बहुत सारे सरकारी, गैरसरकारी संगठन वित्त संस्थाएं स्वयंसमूहों के गठन व उन्हें देखकर निर्धनता निवारण कार्य करती है। अधिकतर यह स्वयं सहायता समूह महिला द्वारा संचालित किए जाते हैं। छोटी-छोटी बचत कर यह अपनी आजीविका को मजबूती प्रदान करते हैं। इन विभिन्न परियोजनाओं के तहत इस स्वयं सहायता समूह को समय-समय पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। फलों और सब्जियों का प्रसंस्करण विभिन्न आचार, जैम, जेली, पापड़, बेकरी उत्पादन, बिस्किट तथा मिर्च मसाले विभिन्न प्रकार की रेडी टु कुक सब्जियां, दीपावली के फराल, मिठाइयां, लड्डू नेचुरल चीजों से बनाए हुए सौंदर्य प्रसाधन तैयार करने की विधि सामग्री का ज्ञान दिया जाता है। जिससे उन्हें आर्थिक रूप से सहायता होती है और हम सब की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

शहरों में चाय, पानी, नाश्ता, वडापाव सेंटर, रोटी भाजी सेंटर तथा सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र, टाइपिंग सेंटर तथा कंप्यूटर सेंटर जिसमें लोगों को रोजगार उपलब्ध होती है। स्वयं सहायता समूह उद्योग धंधे हमारे देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है।

इनमें एक और तो ऐसे साधनों का उपयोग है, जो घरेलू तथा स्थानिक स्तर में विपुल प्रमाण में उपलब्ध है। जिनसे हम अपना अर्थाजन कर सकते हैं।

इन के माध्यम से प्रदूषण भी कम फैलता है। नौकरी के भरोसे बैठे रहने से हमारा विकास नहीं होगा। नहीं बेरोजगारी कम होगी। अतः लघु एवं बड़े उद्योगों की तुलना में इन्हें को देखकर उन्हें बढ़ावा देना ही बुद्धिमतापूर्ण कहां जा सकता है और उससे स्वयं रोजगार निर्माण किए जा सकते हैं। ऐसे संगठनों से महिला सशक्तिकरण का लक्ष्य भी पूरा हो रहा है।

महिलाओं की स्वायत्तता, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है। आर्थिक स्थिति के सुधार के कारण बच्चों की शिक्षा स्वास्थ्य इत्यादि में होता है। जिससे फलस्वरूप महिला सक्रियता सामाजिक, आर्थिक जीवन में सफलता से आगे बढ़ रही है। जिससे समाज परिवार के साथ देश का विकास भी हो रहा है।

जय हिंद जय भारत!

★★★

कृषि संस्कृति और आत्मनिर्भर भारत

रवि कुमार सिन्हा,
पारपत्र कार्यालय, पुणे

विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में कृषि का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। "अक्षैमा दिन्य: कृषिमित कृषस्व मिते रमस्व बहु मन्यमान:" अर्थात जुआ मत खेलो। कृषि करो और सम्मान से धन पाओ। खेती उत्तम इसलिए है क्योंकि इस क्रिया के प्रारंभ होने से उत्पादित होने तक करोड़ों सूक्ष्म जीवों से लेकर गाय, बैल आदि पशुओं एवं करोड़ लोगों का पेट भरता है। गुरुकुल में राजा और प्रजा दोनों के पुत्र खेती करते हुए ज्ञानार्जन करते थे। जिस कारण श्रम और ज्ञान के बीच कोई दूरी नहीं थी।

कृषि संस्कृति में किसान का कोई धर्म नहीं होता। फसल के पहले आने पर किसान चाहे जिस धर्म का क्यों ना हो उसे सबसे अधिक खुशी होती है। फसल का भी कोई धर्म नहीं होता। फिर चाहे उसे किसी भी धर्म को मानने वाले किसान ने उपजाया हो। भारत में कृषि संस्कृति का उद्गम ऋगवैदिक काल से ही हो गया था। धान उस समय की प्रमुख फसल थी। मोहनजोदड़ो में भी 2500 ईसा पूर्व एक विशाल अन्नागार का निर्माण हो चुका था। अत: भारत में कृषि संस्कृति की जड़े ऋगवैदिक काल से ही जुड़ी हुई है। प्राचीन काल से चली आ रही कृषि संस्कृति ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सर्वाधिक योगदान दिया है। कृषि के बिना कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। क्योंकि जब तक पेट में अन्न नहीं होगा तो कोई भी काम नहीं कर सकता। कृषि और आत्मनिर्भरता का एक दूसरे से परस्पर संबंध है।

आज कोरोना काल से विपरीत समय में केवल कृषि ही ऐसा क्षेत्र था जिसमें भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश को डगमगाने नहीं दिया। इस का कारण यह था कि हम कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर थे। इस वर्ष मार्च महीने में हमारे पास डॉक्टरों के लिए पीपीई किट बहुत कम थे। लेकिन आज हम सभी के प्रयासों से केवल 4 महीनों में पीटीई किट, कोरोनावायरस टेस्टिंग मशीन या वेंटिलेटर पर हम आत्मनिर्भर हो चुके हैं। अत: हमें अपने आप पर भरोसा करना होगा। हम सब मिलकर किसी भी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकते हैं। जरूरत है तो सिर्फ आत्मविश्वास ही होने एवं दृढ़ निश्चय की।

हमारा देश संसाधनों की दृष्टि से एक समृद्ध देश है। हमारे देश में कुशल लोगों की भी कमी नहीं है। अत: हमें चाहिए कि हर वस्तु सुई से लेकर हवाई जहाज तक देश स्वयं बना सके और हमें दूसरे देशों पर निर्भर न रहना पड़े।

कृषि संस्कृति एवं आत्मनिर्भरता के कई फायदे हैं-

- इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।
- उद्योगों का विकास होता है क्योंकि उसी से हमें उद्योगों के लिए कच्चा माल आसानी से मिल जाता है।
- रोजगार में वृद्धि होती है।
- दूसरे देशों से आयात में कमी आती है। एवं रुपया डॉलर या अन्य विदेशी मुद्रा के मुकाबले मजबूत होता है।
- निर्यात से वृद्धि होती है। एवं हमारा विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ता हैं।
- कोरोना किसी भी प्राकृतिक आपदा के वक्त हम किसी भी स्थिति में खाद्यान्न नियम या जरूरी वस्तुओं की आपूर्ति बनी रहेगी।
- राष्ट्रीयता का विकास होगा।
- विश्व में एक अलग एवं अच्छी पहचान बनेगी।
- हमेशा आपदा को अवसर के रूप में बदलने का जज्बा बना रहेगा।

अत: अब समय आ गया है कि कृषि एवं सभी संसाधनों की सहायता से भारत का नाम फिर से स्वर्ण अक्षरों में विश्व में प्रकाशमान हो। कृषि एवं आत्मनिर्भरता के सहारे हम फिर से भारत को सोने की चिड़िया वाला देश बना सके। हम सभी पूरे विश्व में "मेड इन इंडिया" का सामान निर्यात कर सकें।

तो आओ हम सभी 130 करोड़ की आबादी मिलकर विश्व की को यह दिखा दे कि,

एक भारत श्रेष्ठ भारत, जय हिंद!

आत्मनिर्भर भारत

केतकी भोसले

भारत दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जो 4000 से अधिक वर्षों से चली आ रही है। और जिसने अनेक रीति-रिवाजों और परंपराओं का संगम देखा है। भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। एक तथ्य की यहां की बात इसके लोगों संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है। भारतीय जीवनशैली या इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट से रूप में दिखाती है। जो संस्कृति हमेशा चिरायु होने पर विश्वास करती है। जिस संस्कृति में जानवरों के प्रति अपने कुटुंब एकता की संस्कृति भूमि को माता मानकर पूजना आदि रूप दिखाती है। जब यही संस्कृति तथा भारत की यही भूमि आत्मनिर्भर हो जाएगी तो एक खुशहाल भारत की कल्पना सच हो जाएगी।

आत्मनर्भिरता यह शब्द दुनिया की तुलना में भारत को एक आशा की किरण बनाना है। भारत की आत्मनिर्भरता का संबंध जीवन की भलाई से है।

आत्मनिर्भरता की इमारत पांच स्तंभो पर खड़ी है वह अर्थव्यवस्था, ढांचा, औद्योगिक, जनसांख्यिकी और मांग। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें हमारे देश की मिट्टी का सुगंध श्रमिकों के पसीने की सुगंध है। आज हमारा भारत आत्मनिर्भरता के सुनहरे मोड पर है। महामंदी ने हमें एक संकेत दिया। नई दिशा दी। जब कोरोना का संकट आया तब भारत केवल नाम मात्र पीपीई किट और n95 मास्क का उत्पादन कर रहा था। वर्तमान तथा भविष्य में वह इतना तैयार हुआ है कि दो लाख से ज्यादा मास्क या पीपीई किट का उद्योजक बना। भारत ऐसा करने में आज सक्षम हुआ क्योंकि इस महामंदी को एक अवसर के रूप में बदल दिया। और यह एक आत्मनिर्भर भारत होने में अपने आप ही पूरे विश्व के सामने उदाहरण बन गया।

आत्मनिर्भरता केवल आत्मविश्वास और आत्मविश्वास के ही आधार पर संभव है। आत्मनिर्भरता देश को दुनिया में प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार कर रही है। भारत को हर प्रतियोगिता में जीत हासिल करने के लिए और महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए आर्थिक व्यवस्था की भी आवश्यकता है। इस चीज को भी ध्यान में रखते हुए सरकार ने आत्मनिर्भर भारत निर्माण की दिशा में विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की है। यह पैकेज कोरोनावायरस में आरबीआई द्वारा तकरीबन ₹2000000 का घोषित किया गया है। इस पैकेज में भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस वित्तीय पैकेज में कई प्रावधान किए गए हैं। इससे व्यवसाय में बढ़ोतरी होगी और सभी क्षेत्रों की गुणवत्ता में सुधार होगा।

भारत ने चंद्रयान-2 तक का सफर अपने ही बलबूते किया है। यह एक आत्मनिर्भरता का उत्तम उदाहरण है। तथा करोना संकट में स्थानीय लोगों ने अपनी मांगों को पूरा किया है। हमें इस संकट में स्थानीय उत्पादन और स्थानीय बाजार के महत्व को सिखाया है। सुमन ने हमें याद दिलाया है स्थानीय चीजों के लिए एक जीवन मंत्र होना चाहिए। नए नए अविष्कारों खोज और तकनीकी की वजह से भारत ने विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है। आज संपूर्ण विश्व का समुदाय भारत की ओर एक आशा की किरण के नजरों से देख रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था अब धीरे-धीरे मजबूत हो रही है।

भारत को एशिया में तीसरी मजबूत अर्थव्यवस्था कहलाया जाता है। इस कारण सामाजिक और आर्थिक बदलाव आ रहे हैं। आज भारत ने अंतरिक्ष जगत में भी अपना अच्छा मुकाम प्रस्तावित किया है। जैसे कि मंगल ग्रह का मिशन। भारत ने संचार क्षेत्र में भी काफी प्रगति की है। लोग एक दूसरे से इंटरनेट मोबाइल फोन के जरिए जुड़ रहे हैं। सबसे बड़ी बात तो इंटरनेट की वजह से कोरोना के लॉकडाउन दौरान बच्चों की घर में रहने के बावजूद पढ़ाई तथा शिक्षा में फायदा हुआ है। यह तो सबसे बड़ी कामयाबी है। डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के माध्यम से हर सुविधा की जानकारी घर बैठे ही मिल जाती है।

क्रमश:...

आत्मनिर्भर भारत

केतकी भोसले

तकनीकी क्षेत्र के मामले में भी वंदे भारत एक्सप्रेस का एक आत्मनिर्भर भारत का उदाहरण है। जो कि स्वदेशी टेक्नोलॉजी का प्रयोग है। कृषि क्षेत्र में भी भारत आत्मनिर्भर हो चुका है। उत्पाद देशों को पीछे छोड़ चुका है। दाल उत्पाद में भारत सबसे आगे हैं। पशुधन में भी दूध उत्पादन में भारत सबसे आगे है। भारत की सेना शक्ति के पास उपकरण हथियार और अब राफेल मौजूद है। भारत की सेना मजबूत है।

भारत में औद्योगिक क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाए हैं। यह सब आत्मनिर्भरता की ओर ले जा रहे हैं। भारत की महिलाएं भी पुरुषों के साथ बराबर कार्य कर रही है। इससे आत्मनिर्भरता में उनका योगदान मिला है। भारत की प्रगति ने हमेशा दुनिया की प्रगति का अनुसरण किया है। भारत के लक्ष्यों उसके काम की दुनिया भर में सराहना हो रही है। हर भारतीय को इस पर गर्व है।

दुनिया मानती है कि भारत बेहतर कर सकता है। भारत मानव के कल्याण के लिए बहुत कुछ कर सकता है। हमारा इतिहास गौरवशाली बना रहे। जब भारत समृद्ध था सोने की चिड़िया कहा जाता था यह विश्व कल्याण के मार्ग पर अभी भी जारी है। भारत सफलतापूर्वक विकास की ओर बढ़ रहा है।

आत्मनिर्भरता केवल हमें खुशी और आराम देती है। बल्कि सशक्त बनाती है। आत्मनिर्भर भारत हमारे लिए एक वरदान साबित हो रहा है। और हम भारत को आत्मनिर्भर भारत बना सकते हैं। और आत्मनिर्भर भारत बनाकर रहेंगे।

★★★

हिंदी पखवाड़ा - निबंध लेखन द्वितीय क्रमांक

चित्रकार: ब्रह्मा सदरे

आत्मनिर्भरता एक जीवन पद्धति

निकिता कुलकर्णी
डेडा प्रविष्टक प्रचालक

जीवन एक संघर्ष है। और इस संघर्ष में मनुष्य को समाज का अपेक्षित सहयोग भी मिलता है। यह संयोग यदि आवश्यकता से ज्यादा मिलने लगे तो वह दूसरों पर निर्भर रहने का आधी हो जाता है। दूसरों पर मनुष्य की निर्भरता उसके पारितंत्र का कारण भी बन सकती है।

वास्तव में स्वावलंबन या आत्मनिर्भरता ही मनुष्य को स्वाधीन बनने की प्रेरणा देती है। आत्मनिर्भरता की स्थिति में व्यक्ति इच्छाओं को अपनी सुविधानुसार पूरा कर पाता है। उसे अपनी किसी इच्छा के लिए दूसरों के सहयोग की कतई आवश्यकता नहीं पड़ती।

पारिभाषिक रूप से देखें तो आत्मनिर्भरता का तात्पर्य होता है। किसी वस्तु अथवा कार्य हेतु स्वयं पर निर्भर रहना हम यदि अपने चारों ओर की प्रकृति पर नजर डालें तो पता चलता है कि छोटे बड़े जीव जंतु भी आत्मनिर्भर है। उन्हें अपने भोजन के लिए तथा घर बनाने के लिए किसी दूसरे सहारे की खोज नहीं करनी पड़ती। वह स्वयं अपना कार्य कर के जीवन में आगे बढ़ते हैं। कुछ पशु पक्षी तो तुरंत जन्म लेने के बाद चलने फिरने वह स्वयं भोजन के लिए सक्षम हो जाते हैं। मनुष्य के साथ ऐसा नहीं होता वह जन्म लेने के बाद कई साल तक आगे जीवन में अपने परिवार पर निर्भर रहता है। कई लोग तो पूरा जीवन ही दूसरों के आधार से जी लेते हैं।

आत्मनिर्भरता से ही मनुष्य प्रगति कर सकता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही अपने एवं अपने परिवार का भरण पोषण करने में सक्षम होता है। बैसाखी के सहारे चलने वाली व्यक्ति को यदि बैसाखी छीन ली जाए तो वह चलने में असमर्थ हो जाता है। ठीक यही स्थिति दूसरों पर निर्भर होने वालों की भी होती है। यदि आप दूसरे पर निर्भर हो और वही आपको मदद करने में असफल हो जाए तो वह मनुष्य आत्मनिर्भर ना होने के कारण अनेक शंकर संकट को सामना करने लग जाता है। आत्मनिर्भर मनुष्य खुद का आरक्षण किसी भी परिस्थिति में कर लेता है। आत्मनिर्भर व्यक्ति उन हर एक मनुष्य के लिए आदर्श है, जो अपने जीवन में कभी आत्मनिर्भरता से जीना नहीं चाहते।

मनुष्य यदि प्रकृति पर निर्भर रहता तो उसने जीवन के हर क्षेत्र में जो प्रगति हासिल की है वह उसे कभी प्राप्त नहीं कर पाता। गृहस्थ जीवन से पहले व्यक्ति का आत्म निर्भर होना आवश्यक है। दूसरों पर निर्भर लोगों के लिए अमित होता है। इसलिए गगृहस्थ जीवन की शुरुआत से पहले लोग रोजगार की तलाश में जुट जाते हैं।

आत्मनिर्भरता आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होती है। जिसके कारण सफलता की राह आसान हो जाती है। आत्मनिर्भर व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग भलीभांति कर पाने में सक्षम होता है। यदि कोई व्यक्ति महान लेखक बनने का सपना देखता है, तो उसे स्वयं लिखना पड़ेगा। दूसरों पर निर्भर रहकर वह कदापि लेखक नहीं बन सकता। वैज्ञानिक स्वयं अपने शोध द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है। खिलाड़ियों को जीत का स्वाद चढ़ाने के लिए खुद मैदान में उतर कर अपना लक्ष्य पूरा कर जीत को पार कर लेता है। यदि छात्र अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उसे स्वयं अध्ययन करना होगा। तभी इस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में उसे सफलता प्राप्त होगी। जब तक भारत परतंत्र था यह अपने विकास के लिए अंग्रेजों पर निर्भर था लोग चाहकर भी अपना एवं अपने देश का भला करने में असमर्थ रह जाते। आजादी प्राप्त करने के बाद भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ एवं आज यह स्थिति है कि भारत दुनिया के विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा हुआ आत्मनिर्भर महापुरुषों के बलिदान से ही यह समय आज आ पाया।

दूसरे पर निर्भर हमें दूसरों का अनुसरण करने के लिए बाधा पैदा करती है। दूसरे पर निर्भर रहते हुए उसकी मर्जी के अनुरूप जीना पड़ता है। हमें लगने लगता है कि हम स्वयं कुछ नहीं कर सकते। ऐसी भावना के कारण हमारी उन्नति बाधित होती है। स्वयं परिश्रम कर अर्जित की हुई संपत्ति का भोग अलग ही होता है।

हमें अपने अंदर छिपी योग्यता एवं मनोबल और अपने आत्मविश्वास का सहारा लेना चाहिए। आत्मनिर्भर जीवन पद्धति अवलंबन कर हम आत्मविश्वास से खुशियां ली से जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

पत्र लेखन स्पर्धा प्रथम क्रमांक

प्रियंका
पी. एस. के. पुणे

शिक्षा व्यवस्था के बारे में चर्चा करते हुए वर्तमान स्थिति पर शिक्षक को पत्र

सेवा में,
प्रधानाध्यक्ष महोदय,
जिला स्कूल, पुणे

विषय: शिक्षा व्यवस्था की वर्तमान स्थिति

महोदय,

मैं अपने देश अर्थात भारत की शिक्षा व्यवस्था पर कुछ चर्चा करना चाहती हूं। शिक्षा समाज की आधारशिला है। शिक्षा के द्वारा ही योग्य नागरिकों का निर्माण होता है। ऐसे नागरिक की जो समाज अथवा राष्ट्र का उत्थान और सुरक्षा कर सकते हैं।
आधुनिक शिक्षा प्रणाली के कुछ दोष:
क. कर्तव्य बुद्धि का अभाव:- आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरु और शिष्य दोनों में कर्तव्य पालन की भावना नहीं है। शिष्य को गुरु में श्रद्धा विश्वास तथा भक्ति भावना है, ना गुरु शिष्य से प्रेमभाव। गुरु केवल ज्ञानार्जन के लिए शिक्षा देते हैं और शिष्य पैसे के पैसे से शिक्षा मूल लेना चाहते हैं। श्रद्धा और प्रेम के द्वारा जब तक ह्रदय से हृदय का मिलन ना हो तब तक विद्या का आदान-प्रदान नहीं हो सकता है।
ख. शिक्षा का निजीकरण:- आज हमारे देश में निजी विद्यालयों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। निजी विद्यालय मनमाने ढंग से शुल्क लेते हैं। मध्यम श्रेणी के लोग अपने बच्चों को निजी विद्यालय में पढ़ा नहीं सकते हैं। निजी विद्यालय समर्थ और असमर्थ लोगों के बीच एक खाई उत्पन्न करती है। शिक्षा के निजीकरण ने समाज के उच्च वर्गों के स्वार्थ के लिए अमीरों और गरीबों के बीच विषमता को बढ़ाने का काम किया है।
ग. वेतन:- हमारे शिक्षकों को वेतन समय पर नहीं दिया जा रहा है। हमारी सरकार और शिक्षकों को शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु ध्यान देना चाहिए जैसे मेरे विचार से शिक्षा तीन तरह की होनी चाहिए। शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक फर्जी डिग्रीओ और दाखिला का निपटारा।

दिनांक:
२८/०९/२०

आपकी आज्ञाकारीणी छात्रा,
प्रियंका

★★★

पत्र लेखन स्पर्धा द्वितीय क्रमांक

आशीष नैन
कनिष्ठ पारपत्र सहायक

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य
अ. ब. स. स्कूल बानेर, पुणे

विषय: वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कौशल शिक्षा का अभाव।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली बढ़ती जनसंख्या के साथ बढ़ती जरूरतों एवं चुनौतियों से निपटने के लिए असक्षम है। दिन-प्रतिदिन के अखबारों न्यूज़ चैनलों एवं सोशल मीडिया जैसे कि ट्विटर के माध्यम से बेरोजगारी एक महामारी से जूझते युवाओं के बारे में सुनते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली सिर्फ डिग्रियां बाँटती है। इस शिक्षा प्रणाली के स्नातक तथा स्नातकोत्तर युवा भी आत्म निर्भर नहीं है। युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं भविष्य में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा प्रणाली में कौशल शिक्षा को शामिल करना वर्तमान की मूल आवश्यकता है। कौशल शिक्षा प्राप्त कर युवा आत्मनिर्भर बनेगा और वह अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के साथ-साथ समाज के कमजोर वर्ग का भी सहारा बनेगा।
कौशल शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में छठी कक्षा से ही पाठ्यक्रम में शामिल कर विद्यार्थियों को इंटर्नशिप कर आनी चाहिए। जो कि आगे चलकर उन्हें अपने पसंदीदा कैरियर को हासिल करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगी। साथ ही में आज के शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का भी अभाव है। इस अभाव को दूर करने के लिए नैतिक शिक्षा को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में विद्यार्थियों को कर रहे भविष्य का जिम्मेदार नागरिक एवं प्रकृति के प्रति सजग एवं उत्तरदाई बनाने में अहम भूमिका अदा करेगी। क्योंकि कौशल शिक्षा से हम उन्हें आत्मनिर्भर तो बना सकते हैं। लेकिन नैतिक शिक्षा उन्हें एक परिपक्व नागरिक बनाने का काम करेगी।
अतः आपसे अनुरोध है कि कृपया उक्त विचारों को ध्यान में लाए और जहां तक आपसे बन सके उसका क्रियान्वयन कराएं।

धन्यवाद
सादर,
अ. ब. स.

दिनांक: २८/०९/२०२०

★★★

पत्र लेखन स्पर्धा तृतीय क्रमांक

विनोद मधुकर कुटे
सहायक अधीक्षक

शिक्षा व्यवस्था के बारे में चर्चा करते हुए वर्तमान स्थिति पर शिक्षक को पत्र

सेवा में
शिक्षक महोदय,
सिहगढ़ स्प्रिंग डेल स्कूल, पुणे

विषय: शिक्षा व्यवस्था के बारे में चर्चा करते हुए वर्तमान स्थिति के बारे में।

महोदय,

अध्ययन एक निरंतर प्रक्रिया है। जिसमें सीखने वाला अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए ज्ञान, आचार और कौशल को एकत्रित कर उसके सीखने के अनुभवों के विकासात्मक रूप से विस्तारित कर सके।
भारत में सन 1986 से चल रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति को 35 साल बाद 29 जुलाई 2020 बदल जारी कर एक ऐतिहासिक शिक्षण युग का आरंभ होने जा रहा है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक श्री कस्तूरीरंगन जी की अध्यक्षता वाली समिति पर आधारित है। जिसका विशेषज्ञों और शिक्षण बिंदु ने स्वागत किया है। तथा कई बिंदुओं को लेकर इसका विरोध भी चल रहा है। इस नई शिक्षा नीति द्वारा स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के मूलभूत ढांचे में बड़े परिवर्तन लाए गए हैं।
नई शिक्षण प्रणाली 5+3+3+4 के रूप में बदल गई है जिसके अनुसार 3 से 6 साल की पढ़ाई को बच्चों की स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया है। जो वर्तमान 10 दो के प्रणाली में शामिल नहीं थी। बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा के पहले प्रारंभिक 5 साल जिसमें बच्चा प्रीस्कूल तथा कक्षा पहली और दूसरी में पड़ेगा। इसके बाद 8 से 11 साल मैं कक्षा 3, चार तथा पांचवी की पढ़ाई करेगा और 11 से 14 साल तक, 6, 7 और आठवीं कक्षा की पढ़ाई करेगा। और 14 से 18 की उम्र में नौवीं से 12 वीं की पढ़ाई करेगा। जिससे शिक्षा का अधिकार जो पहले 6 से 14 साल का था अब 3 से 18 साल बढ़ाकर शिक्षा का दायरा बढ़ाना यह एक स्वागत योग्य कदम है। स्कूली शिक्षा में मातृभाषा को प्राधान्य देकर छात्र पहली से पांचवी कक्षा और आठवीं तक अपनी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण ग्रहण करेंगे। शुरुआती शिक्षण मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से सरलता से समझ सकेंगे और उनकी शिक्षण बुनियाद एक मजबूत नीव पर आगे बढ़ेगी। 12 वीं तक शिक्षा लेने के साथ छात्र कम से कम एक स्किल स्थानिक प्रतिष्ठानों तथा स्कूल में इंटरशिप कर सकेंगे। जिससे जरूरत पड़ने पर यह रोजगार कर सकेंगे। उच्च शिक्षा और शोध की इच्छा रखने वाले छात्र 4 साल में ग्रेजुएशन कोर्स पूर्ण करेंगे। जो वर्तमान में 3 साल है एम्. ए. अब एक साल में होगा जबकि शोध रिसर्च करने वाले 2 साल एम्. फील का कोर्स ना सीधे पीएचडी कर सकेंगे। सरकार के इस बेहतर कदम से समय संसाधन तथा पैसों की बचत होगी। इसके साथ ही सकल घरेलू उत्पाद के 6% हिस्से का शिक्षा क्षेत्र पर खर्च करने की बात रखी गई है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ ही फीस का निर्धारण और उस पर सीमा लगाने की बात शामिल है। स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के लिए नियमित और स्थाई अध्यापकों की नियुक्ति की जाएगी। मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम परावर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। एक एक निकाय रूप से भारत उच्च शिक्षा आयोग गठन किया जाएगा। संगीत, खेल, योग मुख्य पाठ्यक्रम में जोड़ा जाएगा। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21 वीं शताब्दी की देश का विकास उन्नति करें। यह आशा मैं व्यक्त करता हूं।

धन्यवाद,

भवदीय,

विनोद कुटे, पता: वैभवलक्ष्मी निवास, आनंद नगर, सिंहगड रोड, पुणे दि. २८.०९. २०२०

★★★

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन
प्रथम क्रमांक

विनोद मधुकर कुटे
सहायक अधीक्षक

नाम: श्री विनोद मधुकर कुटे
पदनाम: सहायक अधीक्षक
कार्यालय का नाम: पारपत्र ऑफिस मुंडवा पुणे
पीएसपी आईडी: पीएसपी 2240
मोबाइल क्रमांक: XXXXXXXXX

हिंदी पखवाड़ा अंतर्गत प्रतियोगिता
टिप्पण एवं प्रारूप लेखन

टप्पिणी

फाइल संख्या: प्रशासन /२/२०
पारपत्र ऑफिस पुणे दिनांक: २५.०९.२०२०

विषय: कोरोना से बचाव तथा अतिरिक्त बजट की मांग।

कोरोना जैसे वैश्विक महामारी आने की वजह से हमारे कार्यालय का जो वार्षिक बजट था। वह काफी प्रभावित हुआ है। इस चुनौती का सामना करने के लिए हमें अपने कार्यालय तथा अधिकारीगण के लिए बहुत से उपकरण खरीदने पड़ेंगे। जो कि इसकी पहले आवश्यकता नहीं थी। जिसके कारण हमें अपने वार्षिक बजट में काफी वृद्धि करने की आवश्यकता है। जैसे कि तापमापक यंत्र, सैनिटाइजर, मास्क शिल्ड, हाथों में पहनने के लिए हैंड ग्लोव्ज, कुछ काढे जो आयुष मंत्रालय ने सुझाए हैं। साथ ही हमारे कार्यालय तथा पासपोर्ट सेवा केंद्र को पूरी तरह सैनिटाइज करना होगा। नियमित रूप से कुछ आयुर्वेदिक दवाइयां हमारी रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाने के लिए जरूरी है। साथ ही हमें यह भी ध्यान देना होगा कि हमारी अधिकारीगण की वैद्यकीय बिल भी ज्यादा मात्रा में आ सकते हैं। जिसके लिए वैद्यकीय बिलो का विचार करके वैद्यकीय भत्ते भी वृद्धि करनी होगी।
इस हेतु पारपत्र अधिकारी को अनुरोध करते हैं कि यह विषय गंभीर है। और इस विषय में हमें तुरंत अपने मंत्रालय को सूचित करते हुए अपने वार्षिक बजट बढ़ाने के लिए पत्र तैयार किया है। कृपया आप उसका अवलोकन करके अपनी स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें।

हस्ताक्षर
न. म.न.
(पारपत्र अधिकारी)

सहाय्यक पारपत्र अधिकारी

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रथम क्रमांक

विनोद मधुकर कुटे
सहायक अधीक्षक

सं: PNE/P/२/२०२०
भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
पारपत्र कार्यालय, पुणे

दिनांक: २५.०९.२०२०

सेवा में
सचिव,
भारत सरकार,
विदेश मंत्रालय,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली

विषय: कोरोना से बचाव तथा अतिरिक्त बजट की मांग।

माननीय महोदय,

जैसे की हम सबको पता है, कोरोना संकट के कारण जो वैश्विक महामारी आई है। इससे हमें काफी खबरदारी लेने की आवश्यकता निर्माण हुई है। तथा हमारे सभी अधिकारी गण की व्यक्तिगत सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हमें बहुत से संसाधन खरीदने की आवश्यकता पड़ गई है। दरअसल इससे पूर्व हमने इस विषय में कभी सोचा नहीं था। इसलिए हमारी आप से अनुरोध है, कि हमारा जो वार्षिक बजट है। उसको दुगना करने की कृपा करें ताकि हम वह सब संसाधन जो कि इस समय आवश्यक है। जैसे कि सैनिटाइजर, मास्क, हाथों के मोजे, मास्कशिल्ड, दवाइयां जो हमारी इम्यूनिटी को बढ़ाते हैं। आयुष मंत्रालय की तरफ से सुझाए हुए कांटे नियमित रूप से खरीदने पड़ेंगे।

उपरोक्त विषय की गंभीरता को देखते हुए कृपया शीघ्र अति शीघ्र हमारा वार्षिक बजट बढ़ाने की कृपा करें।

भवदीय,
हस्ताक्षर
(क.ख.ग.)
पारपत्र अधिकारी,
पारपत्र कार्यालय, पुणे

★★★

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन द्वितीय क्रमांक

केतकी भोसले
डी. ई. ओ., पारपत्र कार्यालय, पुणे

पुणे सलाहकार समिति, ग्रामीण
पुणे।
फोन: XXXXXXXXX

फाईल क्रमांक- अ/२१०/२०२० दिनांक: २४/०३/२०२०

प्रति,
कलेक्टर,
जलि पुणे।

विषय: कोविड-19 मेडिकल सामग्री पैकेज के बजट में बढ़ोतरी हेतु

माननीय महोदय,

पुणे में कोविड-19 कोरोनावायरस के मरीजों की संख्या में दिन-ब-दिन बढ़ोतरी हो रही है। उसी के चलते हुए मेडिकल सामग्री में कमी होने के कारण मरीजों का ख्याल रखने में असुविधा हो रही है। कोविड-19 के टेस्ट में लगने वाले टीके टेस्ट की सामग्री, सैनिटाइजर की मांग बढ़ रही है।
उपरोक्त अनुसार कृपया कोविड-19 मेडिकल सामग्री पैकेज के बजट बढ़ाने का कष्ट करें ताकि मरीजों की असुविधा ना हो और कोविड-19 का नियंत्रण करने में मदद हो।

आपका,

आलोक चतुर्वेदी

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन-
केतकी भोसले
डी. ई. ओ., पारपत्र कार्यालय, पुणे।

श्री आलोक चतुर्वेदी का पत्र दिनांक २४/०३/२०२० पत्र संख्या अ/२१०/२०२० प्राप्त हुआ है।
इस पत्र में कोरोनावायरस तथा कोविड-19 की महामारी के चलते मरीजों को मेडिकल सेवा प्रदान करने हेतु दिक्कत हो रही है। जिसमें मेडिकल टेस्ट में लगने वाली पीपीई किट, टेस्ट किट सामग्री तथा दवाइयों में भी कमी होने के कारण मरीजों की जांच करने में असुविधा हो रही है। इसलिए मेडिकल सामग्री के बजट तथा पैकेज में बढ़ोतरी हेतु मंत्रालय से अनुरोध किया जा सकता है।
अगर सहमत हो तो पत्र का मसौदा अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है।

वरिष्ठ अधिकारी

★★★

टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तृतीय क्रमांक

रवि कुमार सिन्हा
(वरिष्ठ पारपत्र सहायक)
पारपत्र सेवा केंद्र, मुंडवा

टिप्पण

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय
क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, पुणे

क्रमांक: PNE/५०८/६/२० तथि: 25.09.2020

विषय: कोरोना से बचाव एवं अतिरिक्त बजट की मांग।

कोरोनावायरस महामारी पर गृह मंत्रालय के दिशा निर्देशों के पालन एवं कोरोनावायरस की रोकथाम के लिए कुछ तथ्यों से अवगत होना जरूरी है। क्योंकि हमारा कार्यालय एक जनता से सीधे संपर्क वाला कार्यालय है। तो हमें सबसे पहले लोगों की संख्या कम करनी होगी। सभी जगह सफाई का विशेष ध्यान देना होगा। सैनिटाइजर की उपयोगिता बढ़ानी होगी। फेस मास्क, हैंड ग्लव्स, तापमान मापी यंत्र, डॉक्टरी सलाह, कर्मचारियों को घर से काम करने का निर्देश, डिजिटल मीटिंग को बढ़ावा इत्यादि बातों को उपयोग में लाकर करोना को फैलने से रोकना होगा। इस सभी सामग्री को मंगाने के लिए हमें अधिक बजट की आवश्यकता होगी। अतः जनहित एवं कर्मचारियों के हित को ध्यान में रखकर इस पर त्वरित कार्यवाही आवश्यक है।

हस्ताक्षर
रवि कुमार सिन्हा
वरिष्ठ पारपत्र सहायक

मसौदा

भारत सरकार,
विदेश मंत्रालय,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली

सेवा में २५ सितंबर २०२०
सचिव
विदेश मंत्रालय

विषय: कोरोना से बचाव एवं अतिरिक्त बजट हेतु पत्र

महोदय मैं आपका ध्यान करोना महामारी से फैलनेवाले खतरे की ओर दिलाना चाहता हूं। विशेषकर अपने कार्यालय एवं पुणे महाराष्ट्र में कोरोना की बढ़ती संख्या सबसे ज्यादा है। इसकी रोकथाम के लिए हमें अतिरिक्त संख्या में मास्क, दस्ताने, फेसशिल्ड, सैनिटाइजर, थर्मामीटर एवं अन्य सामानों की बेहद मात्रा में आवश्यकता होगी। जिससे हमारे कर्मचारी एवं आम जनता सुरक्षित रह सके। अतः आपसे यह निवेदन है कि इस वर्ष अतिरिक्त बजट के आवंटन करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूंगा।

भवदीय
अ.ब.स.
पुणे पारपत्र कार्यालय

★★★

पारपत्र सेवा केंद्र, सोलापुर का सौंदर्यीकरण

पारपत्र सेवा केंद्र सोलापुर के सुंदरिकरण हेतु वहाँ पर कार्यरत श्री रंजीव कुमार, सहायक पारपत्र अधिकारी एवं श्री रंगलाल मीणा द्वारा कई फूल, पौधों तथा वृक्षों का रोपण किया गया।

सद्भावना दिवस

प्रतिवर्ष की तरह दिनांक 20.08.2020 को पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जयंती के उपलक्ष्य सद्भावना दिवस मनाया गया। सद्भावना का विषय सभी धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना है। "सदभावना दिवस" के पालन के पीछे का विचार हिंसा से बचना और लोगों के बीच सद्भावना को बढ़ावा देना है।

स्वतन्त्रता दिवस

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय पुणे एवं पारपत्र सेवा केंद्र सोलापुर में स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण किया गया। इसके पश्चात कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा देशभक्ति गीत, कवितायें प्रस्तुत की गयी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

- सतर्कता जागरूकता सप्ताह दिनांक 27 अक्टूबर से 02 नवम्बर 2020 तक इस कार्यालय में मनाया गया। दिनांक 27.10.2020 को प्रातः 11: 00 बजे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सत्यनिष्ठा प्रातिज्ञा ली।
- दिनांक 27.10.2020 को श्री विनय वशिष्ठ, सहायक अधीक्षक (प्रशासनिक अनुभाग) द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमे उन्होने सभी कर्मियों को सरकारी सेवा के आचरण नियमों से अवगत कराया तथा अंत में एक ऑनलाइन प्रतियोगिता भी आयोजित कारवाई जिसमे सभी कर्मी सम्मिलित हुये।
- इस दौरान दिनांक 28.10.2020 को श्री श्याम देशपांडे, भा.प्र.से. (सेवानिवर्त्त) की अध्यक्षता में एक कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमे उन्होने सभी कर्मियों को अपनी सेवाएँ तत्परता से देने हेतु तथा सरकारी सेवा को देश सेवा की तरह देखने के लिए प्रेरित किया तथा भ्रष्ट आचरण से सदा दूर रहने की सलाह दी।
- दिनांक 29.10.2020 को तथा श्री अधीर गडपाले, निदेशक दूरदर्शन की अध्यक्षता में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमे उन्होने सभी देशों के बारे में बातें बताई तथा कार्य के प्रति निष्ठा, लगन सेवा भाव ही देश को तरक्की की राह पार आगे लेकर जाएगा। उन्होने जापान तथा अन्य विकसित देशों के नागरिकों तथा कर्मियों की मूल भावना में देश की तरक्की निहित है तथा उनका निष्ठावान तरीके से कार्य करना ही देश की प्रगति का मूल कारण बताया है।
- दिनांक 02.11.2020 को श्री विनय वशिष्ठ, सहायक अधीक्षक (प्रशासनिक अनुभाग) द्वारा एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमे उन्होने सभी कर्मियों को सरकारी सेवा के दौरान सतर्कता नियमों के पालन किए जाने, आचरण को अक्षुण्ण रखने तथा अपने सारे कार्य सरकारी नियमों के अधीन रखने के लिए नियमों की आवश्यक जानकारी प्रदान की। अंत में प्रश्नोत्तरी सत्र रखा गया।

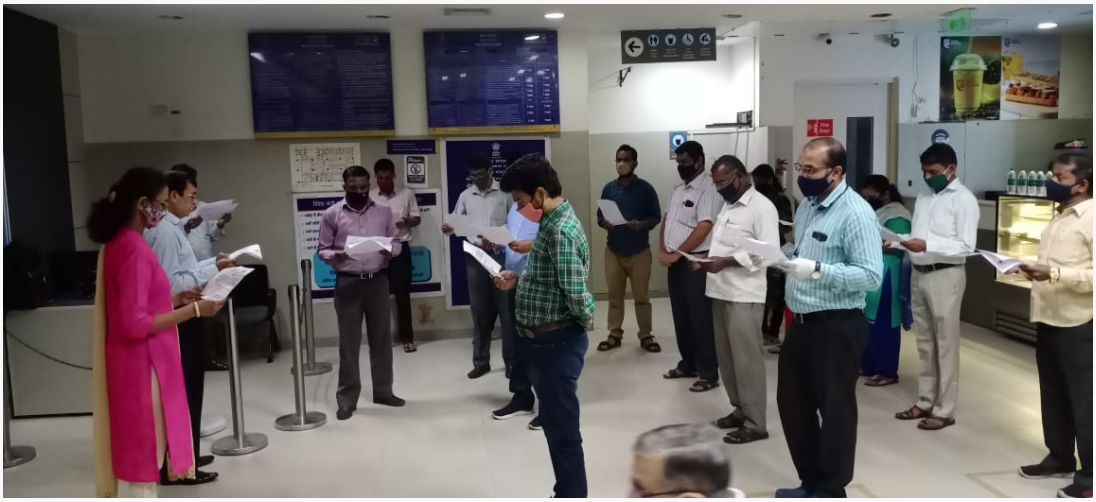

राष्ट्रीय एकता दिवस

श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक 31.10.2020 को राष्ट्रिय एकता दिवस इस कार्यालय में मनाया गया जिसमे राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा ली गयी। यह राष्ट्र निर्माण के लिए सरदार पटेल के बहुआयामी योगदान को याद करने और एक मजबूत, एकजुट भारत के विचार को फिर से पुष्टि करने के लिए एक अवसर है।

संविधान दिवस

दिनांक 26.11.2020 को संविधान दिवस के उपलक्ष्य में संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा गया।

स्वच्छता पखवाड़ा

विदेश मंत्रालय के निर्देशानुसार दिनांक 01-15 जनवरी 2021 तक क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय, सभी पारपत्र सेवा केंद्र एवं सभी डाकघर पारपत्र सेवा केन्द्रों में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान स्वच्छता पखवाड़ा संबंधी बैनर बनवाकर लगवाए गये। स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान स्वच्छता से संबन्धित कार्यक्रम जैसे श्रमदान, प्लास्टिक का कूड़ा समेटना, परिसर पूरी तरह स्वच्छ रखना, विद्यालयों में जाकर स्वच्छता तथा सेनिटेशन के प्रति जागरूकता फैलाना इत्यादि कार्यक्रम शामिल किए गये।

गणतन्त्र दिवस

क्षेत्रीय पारपत्र कार्यालय पुणे एवं पारपत्र सेवा केंद्र सोलापुर में गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण किया गया। इसके पश्चात कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा देशभक्ति गीत, कवितायें प्रस्तुत की गयी तथा सांप्रदायिक सद्भाव सप्ताह में आयोजित निबंध लेखा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

★★★

सेवानिवृत्ति

दिनांक 29.05.2020 को श्रीमती प्रमोदिनी ज्ञानेश्वर जगताप, सहायक अधीक्षक को सेवानिवृत्ति पर इस कार्यालय से कार्यमुक्त किया गया। वह इस कार्यालय में 1999 से कार्यरत थी। कोरोना महामारी के कारण सीमित उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्रीमती ललिता उमेश घाटपाण्डे, सहायक पारपत्र अधिकारी इस कार्यालय में दिनांक वर्ष 2007 से कार्यरत हैं। सेवानिविती पर उन्हे दिनांक 30.09.2020 को इस कार्यालय से कार्यमुक्त किया गया।

★★★

प्रतिनियुक्ति

श्री रंजीव कुमार, सहायक पारपत्र अधिकारी 03 वर्षों की प्रतिनियुक्ति पर इस कार्यालय में दिनांक 01.06.2017 से कार्यरत हैं। वह केन्द्रीय सचिवालय सेवा के अधिकारी है। कोरोना महामारी के कारण उनकी प्रतिनियुक्ति 03 माह के लिए विस्तार की गयी तथा दिनांक 31.08.2020 को उन्हे इस कार्यालय से कार्यमुक्त किया गया।

श्री विलास गोपाल घाडी, सहायक पारपत्र अधिकारी इस कार्यालय में दिनांक 26.11.2018 से कार्यरत हैं। मंत्रालय के निर्देशानुसार उन्हे दिनांक 18.09.2020 को क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय मुंबई स्थानांतरित किया गया।

पुणे

भूमि प्रतिभावंतों की

पारपत्र परिवार
पुणे क्षेत्रीय कार्यालय